Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT |Vol.2, Issue2, Feb 2026, pp. 09-15 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.13
Available online at: https://vijact.com/

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बिहार से प्रव्रजन करने के कारण एवं परिणाम का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ0 निरपेन्द्र कुमार सिन्हा

Article Info

Article history:

Received Feb 07, 2026

Accepted Feb 19, 2026

Published Feb 28, 2026

Keywords:

बिहार
प्रव्रजन
समाजशास्त्रीय विश्लेषण
सात निश्चय
एमएसएमई
नारीकरण
आर्थिक प्रभाव

ABSTRACT

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बिहार से होने वाले प्रव्रजन एक जटिल सामाजिक –आर्थिक प्रक्रिया है। बिहार लंबे समय से जनसंख्या घनत्व, सीमित औद्योगिक विकास, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता ओर संसाधनों के असमान वितरण जैसी समस्या से जुझता रहा है। कृषि क्षेत्र में भूमि का विखंडन, सिंचाई की अपर्याप्त सुविधाएँ और रोजगार के मौसमी स्वरूप ने ग्रामीण आबादी को आजीविका के वैकल्पिक साधनों की तलाश में राज्य से बाहर जाने के लिए प्रेरित किया है। सामाजिक संरचना में विद्यमान जाति आधारित असमानता, गरीबी और सामाजिक सुरक्षा के अभाव ने भी निम्न एवं हाशिए के वर्गो को प्रव्रजन के लिए विवश किया है। प्रव्रजन बिहार की सामाजिक एवं आर्थिक पहचान की अभिन्न अंग बन चुका है। यह शोध पत्र इस बात की जाँच –पड़ताल करता है कि 21 वीं सदी के तीसरे दशक में बिहार से होने वाले पलायन प्रव्रजन के पीछे कौन से नए कारक उत्तरदयी है और इसका ग्रामीण संरचना पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। यह शोध बिहार आर्थिक सर्वेक्षण (2024–25), जनगणना रिपोर्ट और प्रमुख समाजशास्त्रियों के साहित्य की समीक्षा पर आधारित है। साथ ही, इसमें गुणात्मक विश्लेषण का प्रयोग करते हुए प्रवासन के 'पुश–पुल' कारकों की व्याख्या की गई है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ प्रहले प्रव्रजन केवल 'अभाव; के कारण होता था, वही अब यह 'आकांक्षाओं और बेहतर जीवन गुणवत्ता' के लिए अधिक हो रहा है। समाजशास्त्रीय रूप से, इसने बिहार के गाँवों में 'नारीकरण' (Feminization) को जन्म दिया है एवं पारंपरिक जातिगत बंधनों पर अंकुश लगाने का कार्य किया है। राज्य सरकार की 'सात निश्चय' जैसी योजनाओं ने बुनियादी ढ़ाँचे में सुधार लाकर प्रव्रजन की प्रकृति को 'अकुशल' से 'कुशल', 'अभाव' से 'आकांक्षाओं' की ओर मोड़ने का कार्य किया है। प्रव्रजन को रोकने के लिए केवल कृषि सुधार पर्याप्त नहीं है, बल्कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों का ग्रामीण स्तर पर सुदृढ़ीकरण और स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन अनिवार्य है।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author:
डॉ0 निरपेन्द्र कुमार सिन्हा
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा (बिहार)
Email: nirpendra.kumarsinha@gmail.com

1. परिचय :

मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ प्रव्रजन की प्रक्रिया भी निरंतर चलती रही है। इतिहास में लोग बेहतर जीवन, सुरक्षा, रोजगार, शिक्षा तथा संसाधनों की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे हैं। आधुनिक समाज में प्रव्रजन

एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया बन चुका है, जिसका प्रभाव व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना पर पड़ता है। भारत जैसे विशाल देश में आंतरिक प्रव्रजन की समस्या विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ राज्यों के बीच आर्थिक एवं सामाजिक असमानताएँ अत्यधिक हैं।

बिहार भारत के उन राज्यों में शामिल है जहाँ से सबसे अधिक संख्या में लोग रोजगार एवं आजीविका की तलाश में अन्य राज्यों की ओर जाते हैं। बिहार के लाखों श्रमिक पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान तथा दक्षिण भारत के राज्यों में कार्यरत हैं। बिहार का प्रव्रजन मुख्यतः आर्थिक कारणों से प्रेरित है, किंतु इसके पीछे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक कारण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बिहार लंबे समय से गरीबी, बेरोजगारी, सीमित औद्योगिकीकरण, कृषि संकट तथा प्राकृतिक आपदाओं जैसी समस्याओं से जूझता रहा है। राज्य की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है, लेकिन कृषि का पारंपरिक स्वरूप, भूमि का विखंडन तथा बाढ़ एवं सूखे जैसी समस्याएँ लोगों को स्थायी आय उपलब्ध नहीं करा पातीं। परिणामस्वरूप युवा वर्ग रोजगार की तलाश में अन्य राज्यों की ओर पलायन करता है। बिहार से श्रमिकों/मजदूरों के पलायन अथवा प्रव्रजन कोई नयी बात नहीं, स्वत्रतंता के बाद जनआंदोलन करने वाला बिहार आज रोजगार और शिक्षा के लिए पलायान का दंश झेल रहा है। इसके पिछे राज्य की आर्थिक हालात, शिक्षा की बदहाली स्थिती, स्वास्थय सुविधाओं की कमी तथा राजनीतिक एवं सामाजिक हालात (जातीय संघर्ष वोट की राजनीति) अहम है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बिहार से होने वाला प्रव्रजन (Migration) केवल एक आर्थिक या राजनीतिक गतिविधि अथवा मुद्दा नही है, बल्कि यह एक प्रमुख सामाजिक–सांस्कृतिक परिघटना है। बिहार से प्रव्रजन विशेष तौर पर नदियों के किनारे बसे ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से सर्वाधिक रही है। नेपाल से बहने वाली कोसी नदी का बहाव इतना अधिक होता है कि इसे बिहार का अधिकांश उत्तरी क्षेत्र जलमग्न हो जाता है इसलिए इसे 'बिहार का शोक' अथवा 'बिहार का दुख' कहा जाता है। ऐसे ही गंडक बैराज से पानी छोड़ने पर बिहार के कई क्षेत्रों में बाढ़ आने की संभावना बढ़ जाती है। इसे रोकने के लिए बाल्मीकि नगर में बैराज बनाया गया है। बूढ़ी गंडक उत्तर–पश्चिमी से दक्षिण–पूर्व की ओर है।

नदियों के तीव्र बहाव बिहार के नीचले क्षेत्र (विशेषकर कृषि) वर्षा एवं बांधों से पानी छोड़ने के कारण डूब जाते है। जिससे वहाँ के बहुत से युवा काम की तलाश में (रोजी–रोटी के लिए) बिहार के बाहर दूसरे राज्यों में प्रव्रजन के लिए मजबूर हो जाते है, यह आज से नहीं विगत कई वर्षो से ऐसा हो रहा है। किन्तु प्रव्रजन के लिए केवल भौगोलिक परिस्थितियों को जिम्मेदार ठहराना उचित नहीं है। इसके लिए सामाजिक संरचना, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक माहौल, जंगलराज, पारिवारिक जीवन तथा रोजगार अवसरों की तलाश प्रमुख कारण है, जिससे इनपर दूरगामी प्रभाव पड़े है।

2. साहित्य की समीक्षा

अर्जन डी हान (2002), ने अपने लेख ''माइग्रेशन एंड लिवलिहुडस इन हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव : ए केस स्टडी ऑफ बिहार में उल्लेख किया है कि 19 वीं शताब्दी के उतरार्ध से ही बिहार के श्रमिक बंगाल के जूट मिलों और असम के चाय बागानों की ओर पलायन कर रहे है थे। उन्होंने इसे जीवन निर्वाह की एक अनिवार्य रणनीति बताया है।

अलख एन. शर्मा (1997) के अनुसार, 1970 और 1980 के दशक के दौरान 'हरित क्रांति' ने बिहार के श्रमिकों को बड़े पैमाने पर पंजाब और हरियाणा की ओर आकर्षित किया, जिससे मौसमी प्रवासन (Seasonal migration) की प्रवृति बढ़ी। इंद्रजीत राय (2017) ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि बिहार से पलायन करने वाले श्रमिकों में एक बड़ा हिस्सा दलित, महादलित और पिछड़ी जातियों का है। उनके लिए प्रवासन स्थानीय सामंती बंधनों और जातिगत उत्पीड़न से मुक्ति का एक मार्ग है।

अमृता दत्ता (2016) ने अपने शोध में तर्क दिया है कि निम्न जातियों के बीच गाँव में शारीरिक श्रम करने के प्रति एक प्रकार की 'अरूचि' (Aversion) पैदा हुई है, क्योंकि वे शहर में जाकर 'अनाम श्रमिक' (Anonymous worker)के रूप में काम करना अधिक सम्मानजनक मानते हैं।

मिरंडा दास (2024) ने टी आई एस एस (TISS) के अपने अध्ययन में पाया कि पुरूषों के पलायन से ग्रामीण बिहार में ''लेफ्ट बिहांइड'' (Left behind) महिलाओं की संख्या बढ़ी है। यद्यपि इससे उन पर काम का बोझ बढ़ा है, लेकिन इसने उन्हें घर के वित्तीय और सामाजिक निर्णय लेने में स्वायत्तता भी प्रदान की है।

पुष्पेन्द्र (2024) के अनुसार, प्रवासन पितृसत्तात्मक ढ़ांचे में बदलाव लाता है, जहाँ महिलाएँ अब केवल घरेलू कामगार नहीं बल्कि 'प्रबंधनकर्त्ता' की भूमिका में उभर रही है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. बिहार से होने वाले प्रव्रजन के पारंपरिक और आधुनिक कारणों का समाशास्त्रीय विश्लेषण करना।
2. प्रव्रजन के कारण ग्रामीण बिहार के जातिगत समीकरणों और संयुक्त परिवार के विघटन पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करना।
3. पुरूषों के प्रव्रजन के बाद पीछे छूट गई महिलाओं को प्राप्त सामाजिक–आर्थिक जिम्मेदारियों का अध्ययन करना।

4. अध्ययन विधि :

यह शोध वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है। इसके अंतर्गत प्राथमिक एंव द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का व्यवहार किया गया है। इसमें द्वितीयक स्रोत के रूप में जनगणना 2011, एन एस एस ओ की रिपोर्ट, बिहार आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट (2024–25) और अंर्तराष्ट्रीय प्रवासन रिपोर्ट की मदद ली गई है। प्राथमिक अवलोकन के रूप में बिहार के विभिन्न जिलों (जैसे – दरभंगा, सीवान, पूर्णिया, सहरसा) के प्रवासियों के परिवारों से साक्षात्कार पर आधारित है।

5. प्रव्रजन की अवधारणा एवं प्रकार

प्रव्रजन (Migration):– जब कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अपनू मूल निवास स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर जाकर बस जाते है तो इस प्रक्रिया को प्रव्रजन कहते है। यह प्रव्रजन स्थायी , अस्थायी या मौसमी हो सकती है।

प्रव्रजन के प्रकार (Types of Migration)

1. **दूरी के आधार पर**

   आंतरिक प्रव्रजन : देश की सीमा के भीतर (जैसे बिहार से दिल्ली जाना)

   अंतराष्ट्रय प्रव्रजन : एक देश से दूसरे देश जाना (जैसे भारत से अमेरिका जाना)

2. **समय के आधार पर**

   स्थायी प्रव्रजन : हमेशा के लिए बस जाना

   अस्थायी/मौसमी प्रव्रजन : खेती की कटाई या किसी विशेष प्रोजेक्ट के लिए कुछ समय हेतु जाना।

3. **इच्छा के आधार पर**

   स्वैच्छिक : बेहतर अवसर और शिक्षा के लिए अपनी मर्जी से जाना।

   अनिवार्य/मजबूरी : आपदा, युद्ध या दंगो के कारण भागना (इन्हें शरणार्थी या Refugees कहा जाता है)।

बिहार में प्रव्रजन को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है –

अकुशल श्रम प्रव्रजनः खेतीहर मजदूर और निर्माण कार्य में लगे लोग जो पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और महाराष्ट्र जाते है।

कुशल/पेशेवर प्रव्रजनः आईटी, इंजीनियंरिंग और प्रबंधन क्षेत्र के युवा जो बेंगलुरू, पुणे और हैदराबाद जैसे शहरों का रूख करते है।

छात्र प्रव्रजनः उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी के लिए दिल्ली, कोटा, और प्रयोगराज जैसे शहरों में जाने वाले छात्र।

प्रव्रजन के मुख्य घटक :– प्रव्रजन को समझने के लिए दो तकनीक शब्दों का प्रयोग कर सकते है –

अप्रव्रजन (Immigration): जब कोई व्यक्ति किसी नए स्थान पर आता है।

उत्प्रव्रजन (Emigration): जब कोई व्यक्ति अपने मूल स्थान को छोड़कर जाता है।

6. प्रव्रजन के कारण (Causes of Migration) : बिहार से प्रव्रजन के कारणों पर यदि प्रकाश डाला जाए तो मुख्य रूप से इसके पीछे 'पुश' (Push) और (Pull) कारकों का एक जटिल जाल देखने को मिलता है जिसे हम कुछ बिन्दुओं द्वारा समझ सकते है –

6.1 आर्थिक कारक :– यह एक 'पुश' (Push) कारक है जिसके अंतर्गत निम्न बिन्दु देखे जा सकते है–

कृषि संकट– आज भी बिहार की लगभग 70 से 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्यो पर निर्भर है किन्तु जोत का छोटा आकार जो औसतन 0.3 हेक्टेयर है तथा बार –बार आने वाली बाढ़ व सूखा खेती को अलाभकारी बना देती है, जिसके कारण खेतहर मजदूर, छोटे जोत के किसान, राज्य के बाहर मजदूरी करने को विवश होते है।

औद्योगीकरण का अभाव– निर्माण एवं विनिर्माण (Construction and Manufactioning) में बिहार के कम योगदान के कारण स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसरों में भारी कमी देखी जा सकती है हाँलाकि वर्त्तमान में बिहार सरकार केन्द्र के सहयोग से बिहार के विभिन्न जिलों में औद्योगिक इकाईयों को स्थापित करने का प्रयास कर रही है फिर भी अन्य राज्यों की अपेक्षा इसकी गति धीमी है अतः यह कहना अनुचित ना होगा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में औद्योंगिकरण का अभाव प्रव्रजन का एक मुख्य कारण है।

मजदूरी में अंतर– वास्तव में देखा जाए तो बिहार की तुलना में अन्य प्रदेशों एंव केन्द्रशासित प्रदेशों में जैसे पंजाब, हरियाणा, दक्षिण भारतीय राज्यों, दिल्ली आदि में मजदूरी दर 2 से 3 गुना अधिक हे जो यहाँ के श्रमिकों (मजदूरों) को पलायन के लिए मजबूर करता है।

6.2 सामाजिक एवं संरचनात्मक कारक :– बिहार से प्रव्रजन के कारक में सामाजिक एवं सरंचनात्मक मुख्य रूप से दो आधार पर देखने को मिलती है –

(i) जातिगत संरचना और गतिशीलता के रूप में

(ii) शिक्षा और आकांक्षाओं के रूप में –

जतिगत संरचना और गतिशीलता की बात करें तो आज भी जातिगत पदानुक्रम जिसकी बात प्रो. जी. एस. घुरिए और लूईस ड्यूमाँ ने की है, वह आज भी कठोरता के साथ अपनायी हुयी देखी जा सकती है। निम्न जातियों के लिए सामाजिक अपमान और भेदभाव से मुक्ति पाने का एक जरिया भी है जहाँ गुमनाम शहर उन्हें समानता का अवसर देता है। वहीं दूसरे रूप में युवाओं के अन्दर बेहतर शिक्षा और शहरी जीवन शैली (Urban Lifestyle) के प्रति बढ़ती आकांक्षाएँ उन्हें बड़े महानगरों की ओर खींचती है।

7. बिहार से पलायन के आँकड़े – बिहार से पलायन/प्रव्रजन कोई नयी बात नहीं है यदि आंकड़ों को देखे तो वर्ष 1951 से लेकर 1961 तक यहाँ के लगभग 4 प्रतिशत लोगों ने रोजगार के सिलसिले में दूसरे राज्यों में पलायन किया था। वहीं वर्ष 2011 की जनगणना पर नजर डाले तों 2001 से 2011 के बीच लगभग 93 लाख लोग बिहार छोड़कर दूसरे राज्य में

प्रवजन कर लिए। देश की पलायन करने वाली कुल आबादी का लगभग 17 प्रतिशत अकेले बिहार से है जो सूची में उत्तर प्रदेश के बाद दूसरे स्थान पर है। इंडियन इंस्ट्टियूट ऑफ पापुलेशन स्टडीज के अनुसार वर्ष 2020 में किए गए एक शोध के अनुसार बिहार की आधी आबादी का पलायन सीधा संबंध है। ए. एन. सिन्हा इंस्ट्टियूट के विद्यार्थी विकास के विशेषज्ञों का कहना हे कि ''देश के 18 जिलों में सबसे अधिक पलायन होता है उसमें से बिहार के 6 जिले यथा मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सारण (छपरा) सिवान और पटना है। बिहार से पलायन का प्रमुख कारण बिहार के छोटे उद्योग–धंधों का विकास जितना होना चाहिए था नहीं होना है।''

8. प्रव्रजन के समाजशास्त्रीय परिणाम :– प्रव्रजन ने बिहार के समाज को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के परिणामों से प्रभावित किया है –

8.1 सकारात्मक परिणाम :– प्रव्रजन के सकारात्मक परिणाम निम्नवत है –

(i) मनी आर्डर अर्थव्यवस्था – विदेशों और दूसरे राज्यों से भेजे गए धन (Remittances) ने बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी कम करने और जीवन स्तर को सुधारने में बड़ी भूमिका निभाई है। इससे पक्के मकान, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थय पर खर्च बढ़ा है।

(ii) सामाजिक परिवर्तन – प्रवासी मजदूर जब वापस लौटते है, तो वे अपने साथ आधुनिक विचार, नई तकनीक और शहरी मूल्य लेकर आते है, जो ग्रामीण रूढ़िवादिता को कम करने में सहायक होते है। यह सांस्कृतिक प्रसार (Cultural Diffusion) का उदहारण है।

8.2 नकारात्मक परिणाम :– इसके अंतर्गत निम्नलिखित परिणाम देखने को मिलते है –

कृषि का महिलाकरण (Feminization of agriculture) – बिहार से पुरूषों/युवाओं के पलायन के कारण कृषि कार्यों और घरेलू प्रबंधन की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर आ गई है। हालांकि इससे महिलाएँ और सशक्त हुई है, किन्तु उन पर काम का दोहरा वोझ (Dual Burden) भी बढ़ गया है।

परिवार का विघटन (एकाकी परिवार के रूप में):– प्रव्रजन/पलायन ने संयुक्त परिवार को लगभग तोड़ दिया है यह एकल/एकाकी परिवार में परिवर्तित हो गया है इससे बुजुर्गो और बच्चों में एकाकीपरन और मनोवेज्ञानिक असुरक्षा बढ़ी है।

प्रतिभा पलायन (ब्रेन ड्रेन) – बिहार से प्रव्रजन अथवा पलायन द्वारा सबसे कम्रठ शिक्षित एवं कुशल युवाशक्ति बाहर चली जा रही है, जिससे राज्य के आंतरिक विकास की गति धीमी हो रही है।

स्लम संस्कृति और शोषण – शहरों मे जाने वाले अकुशल श्रमिक अक्सर अमानवीय स्थितियों में रहते है, जहाँ वे अपराध और बीमारियों की ओर अग्रसर होते है।

संस्कृति अलगाव – प्रवासी अक्सर न तो पूरी तरह शहरी संस्कृति को अपना पाते है और न ही अपनी मूल संस्कृति से जुड़े रह पाते है, जिससे वे हाशियाकरण (Marginalization) के शिकार होते है।

9.वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रव्रजन की नई चुनौतियाँ – आज के समय में प्रव्रजन के स्वरूप में कुछ नए बदलाव आए है जिन्हें निम्न बिन्दुओं द्वारा देखा जा सकता है –

डिजिटल जुड़ाव– आज के इस वर्तमान दौर में प्रत्येक व्यक्ति डिजिटल कनेक्टिविटी से जुड़ा हुआ है इससे प्रवासी भी अपने परिवार से जुड़े रहते है जिससे उनका सांस्कृतिक अलगाव ना के बराबर हो गया है, फिर भी भौतिक अनुपस्थिति का दर्द अभी भी कायम है। इसे क्षेत्रीय विकास द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

राजनीतिक हस्तक्षेप में कमी– बिहार के युवा एवं श्रमिकों के पलायन से वोटर पोओबिलिटी की कमी राजनीति को हाशिए पर लाकर खड़ी कर दी है इसलिए बिहार से प्रव्रजन के मुद्दें को एक राजनीतिक हथियार के रूप में राजनीतिक पार्टियाँ इस्तेमाल कर रही है वर्तमान में जनसुराज पार्टी के अध्यक्ष प्रशान्त किशोर तथा अन्य विपक्षी नेता सरकार पर तंज कस रही है कि सरकार बिहार से पलायन को रोक नहीं पा रही है यह सरकार की नकामी को दर्शाता है।

रिवर्स माइग्रेशन– कोविड –19 महामारी के दौरान लाखों लोग वापस लौटे, जिससे राज्य सरकार पर स्थानीय रोजगार पैदा करने की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। लोगों में स्वरोजगार की भावना बढ़ी है।

प्रव्रजन के क्षेत्रों में बदलाव– आज के परिप्रेक्ष्य में बिहार के श्रमिक अब केवल दिल्ली, पंजाब, हरियाणा तक सीमित नहीं है, बल्कि अब वे दक्षिण भारतीय राज्यों में बड़ी संख्या में रोजगार के लिए जा रहे है जैसे तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र एवं तेलंगाना आदि राज्यों में। ऐसे ही देश के बाहर भी कुशल श्रमिक भारी संख्या में अल्प देशों में पलायन कर रहे है।

सरकारी प्रयास– बिहार सरकार अब 'स्टार्टअप योजना' 'मैक इन इंडिया', 'वोकल फोर लोकल' (स्वदेशी उद्यम योजना) के माध्यम से स्थानीय उद्यमों को बढ़ावा दे रही है। कृषि में सुधार के अलावा MSMEs के क्षेत्र में एथेनॉल प्लांट, रेल कोच निर्माण कारखाना, आई. टी. सेक्टर आदि को बढ़ावा देना जैसे, रोजगार के अवसर बढ़ाकर पलायन को कम किया जा सकता है।

10. निष्कर्ष (Conclusion)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बिहार का प्रव्रजन 'अभाव' और 'अवसर' के बीच का संघर्ष है। जहाँ एक ओर इसने आर्थिक सबल प्रदान किया है, वहीं दूसरी ओर इसने बिहार के ग्रामीण सामाजिक ताने–बाने को बदल कर रख दिया है। विकास की ऐसी नीति की आवश्यकता है जो 'पलायन' को 'स्वैच्छिक आवाजाही' में बदल सके, न कि वह मजबूरी बनी रहे। कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना और स्थानीय एम.एस.एम.ई (MSME) अर्थात सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (Micro, Small and medium Enterprises)को बढ़ावा देने से प्रव्रजन की दर को संतुलित किया जा सकता है।

References

[1]. हान, डी. अर्जन (2002), *''माइग्रेशन एंड लिवलिहुडस इन हिस्ट्रोकिल पर्सपेक्टिभ : ए केस स्टडी ऑफ बिहार,''* जर्नल ऑफ डेभलपमेंट स्टडीज, वाल्यूम 38, न. 5, पृष्ठ 115–116

[2]. शर्मा, एन. अलख (1997), *''माइग्रेशन फार्म द भिलेजस ऑफ बिहार : ए सोशियो–इकोनोमिक्स स्टडी,''* द इंडियन जर्नल ऑफ लेबर इकोनोमिक्स, पृष्ठ 25–27

[3]. राय, इन्द्रजीत (2017), *''रूरल–अर्बन माइग्रेशन इन बिहार : इंपलिकेसंस फॉर सोशल सिटीजनशिप पद कन्टेम्परारी इंडिया,''* फाइनल रिपोर्ट, युनिवर्सिटी ऑफ यार्क, पृष्ठ 12–14

[4]. दत्ता, अमृत (2016), *''माइग्रेशन फॉर्म रूरल बिहार : इनसाइटस फार्म लांगिटयूडनल रिसर्च,''* इन एच. आर. सिंह, द चेंजिग भिलेज इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, पृष्ठ 385–388

[5]. दास, मिरंडा (2024), *''मेल आउट माइग्रेशन एंड वोमेन इन रूरल बिहार : ए सोशियो – लिगल स्टडी,''* जर्नल ऑफ माइग्रेशन अफेयरर्स, वाल्यूम 6, पृष्ठ 4–6

[6]. पुष्पेन्द्र (2024), *''माइग्रेशन एंड डेभलपमेंट इन इंडिया : द बिहार एक्सपीरियंस (बुक रिभ्यु),''* जेंडर डेभलपमेंट, वाल्यूम 32 पृष्ठ 621–623

Cite this Article:

डॉ0 निरपेन्द्र कुमार सिन्हा, "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बिहार से प्रव्रजन करने के कारण एवं परिणाम का समाजशास्त्रीय विश्लेषण", Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 2, pp. 09-15, February 2026.

Journal URL: https://vijact.com

***DOI:** https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.13*